मूलभूत सूचनाएं और नीतियाँ

वार्षिक अकादमिक पत्रिका,
कालिंदी महाविद्यालय
विज्ञान, मानविकी और सामाजिक विज्ञान का बहु-विषयक वार्षिक पीयर रिव्यूड पत्रिका
आई.एस.एस.एन:-2348-9014

पत्रिका के विषय में

कालिंदी महाविद्यालय की वार्षिक अकादमिक पत्रिका विज्ञान, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की बहु-विषयक वार्षिक पीयर रिव्यूड पत्रिका है, जो एक सजीव और प्रगतिशील शैक्षणिक वातावरण बनाने एवं अंग्रेजी, हिंदी और संस्कृत विषय के विद्वतापूर्ण शोध- लेख को राष्ट्रीय स्तर पर प्रकाशित कर उत्कृष्ट शोध को बढ़ावा देती है। पत्रिका की डबल-ब्लाइंड पीयर-रिव्यू प्रक्रिया मूल और अभिनव योगदान को बढ़ावा देने के उद्देश्य से प्रकाशित होने वाले लेखों की गुणवत्ता सुनिश्चित करती है।

महाविद्यालय की स्थापना के साथ ही पत्रिका मुद्रित रूप में प्रकाशित होती रही है, परंतु बाद में शैक्षणिक सत्र 2019-2020 में पत्रिका का प्रकाशन पूर्णतया डिजिटल हो गया और एक सजीव बौद्धिक परंपरा और वातावरण बनाने में सहयोग कर रही है।

(शोध पत्र) भेजने के लिए दिशानिर्देश

वार्षिक अकादमिक पत्रिका, कालिंदी महाविद्यालय, विज्ञान, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की बहु विषयक वार्षिक पत्रिका, आई.एस.एस.एन: 2348-9014, डबल-ब्लाइंड पीयर-रिव्यूड पत्रिका है और इसके प्रत्येक अंक में अकादमिक रुचि के विभिन्न विषयों पर लेख सम्मिलित रहते हैं।

#सबमिशन पोर्टल (लिंक) के माध्यम से वर्ड और पीडीएफ दोनों ही प्रारूप में फाइलें निम्नलिखित टेम्पलेट के अनुसार भेजनी हैं-

अंग्रेजी/विज्ञान के लिए टेम्पलेट डाउनलोड करें

हिंदी के लिए टेम्पलेट डाउनलोड करें

भेजे गए शोध-पत्र, जो टेम्प्लेट दिशानिर्देशों का अनुपालन नहीं करते हैं, उन पर प्रकाशन के लिए विचार नहीं किया जाएगा।

सभी प्रविष्ठियों और प्रश्नों को केवल submissionkc2016@gmail.com ई-मेल पर भेजना है, न कि संपादकीय बोर्ड के किसी भी सदस्य के व्यक्तिगत ईमेल आईडी पर।

शब्द सीमा- न्यूनतम 3000 (सार, कीवर्ड, उद्धृत कार्य और बायो-नोट को छोड़कर), 5000 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

लगभग 150-250 शब्दों में लेख का सारांश शोध-पत्र की शुरुआत में देना अनिवार्य है।

लेख के कीवर्ड (संख्या : 5 से 6 तक) शोध-पत्र की शुरुआत में दिए जाने चाहिए।

योगदानकर्ताओं से अनुरोध है कि वे किसी भी प्रकार की प्लैग्रिज्म से मुक्त शोध पत्र की मौलिकता का स्व-सत्यापित घोषणा-पत्र प्रदान करें।

योगदानकर्ता ओपन-सोर्स प्लैग्रिज्म सॉफ़्टवेयर जैसे डुप्ली चेकर, कॉपीलीक्स या प्लैग्रिज्म आदि का उपयोग करके अपने लेख के साथ प्लैग्रिज्म रिपोर्ट अवश्य जमा करें।

संशोधित प्रविष्टियां

समीक्षकों द्वारा प्राप्त फीडबैक के अनुसार योगदानकर्ताओं से अपनी पांडुलिपि को संशोधित करने की उम्मीद की जा सकती है। लेखकों को संशोधित पांडुलिपि उन्हें दिए गए निर्धारित समय के भीतर वापस करनी होगी।

पीयर-रिव्यू प्रक्रिया

#सभी सबमिशन को डबल-ब्लाइंड पीयर-रिव्यू प्रक्रिया सख्ती से किया जाएगा, जिसमें लेखक और समीक्षक दोनों की पहचान एक दूसरे से गोपनीय रखा जाएगा।

#समीक्षक की सिफारिश के आधार पर लेखकों को समय पर शोध-पत्र की स्वीकृति/अस्वीकृति या संशोधन के बारे में सूचित किया जाएगा।

#अस्वीकृत शोध-पत्र संस्था द्वारा रखे नहीं जाते हैं।

#संपादकीय बोर्ड का निर्णय बाध्यकारी और अंतिम है।

संपादकीय नीति

पत्रिका से किसी भी प्रकार की प्लैग्रिज्म करने पर कठोर नीति अपनाई जाती है।

#संपादकीय मंडल पांडुलिपि को पीयर रिव्यू प्रक्रिया के लिए भेजने से पहले मूल संरचना और प्रारूप के पूर्णतया अनुपालन को सुनिश्चिय करता है।

संपादकीय बोर्ड द्वारा प्लैग्रिज्म के लिए प्रस्तुत पांडुलिपियों की भी जाँच की जाती है।

प्रकाशन हेतु कोई शुल्क नहीं लिया जाता है।

संपादक - मंडल

संस्करणों के लिए संपादकीय बोर्ड; XX और XIX

(अर्थात शैक्षणिक सत्र 2019-20 और 2020-21)

संपादक:

डॉ. अंजलि बंसल (अंग्रेजी अनुभाग)

डॉ. निशा गोयल (हिंदी अनुभाग)

सह-संपादक:

• डॉ. चैती दास

• डॉ. रक्षा गीता

संपादक - मंडल:

• सुश्री शिप्रा गुप्ता

• डॉ. त्रिरंजीता श्रीवास्तव

• डॉ. रीना जैन

• सुश्री तनु शर्मा

• श्री. सुरेश कुमार

आगामी वाल्यूम XXI के लिए संपादकीय बोर्ड:

एडिटर-इन चीफ:

• डॉ. चैती दास

• डॉ. निशा गोयल

सह-संपादक:

सुश्री शिप्रा गुप्ता

डॉ. रक्षा गीता

सहयोगी संपादक:

डॉ. त्रिरंजीता श्रीवास्तव

सुश्री तनु शर्मा

संपादक - मंडल

डॉ. ममता चौरसिया

डॉ. देश राज

डॉ. रिंकू कौशिक

डॉ. अल्का रानी

डॉ. विभा ठाकुर
सुश्री उषा कुमारी पाठक
श्री अवनीश कुमार
डॉ. रितु शर्मा

कॉपीराइट

प्रकाशन के लिए शोध-पत्र प्रस्तुत करने वाले लेखक किसी अन्य व्यक्ति के कॉपीराइट के उल्लंघन नहीं करने की गारंटी देंगे। वार्षिक अकादमिक पत्रिका, कालिंदी महाविद्यालय, ऐसी किसी भी वारंटी के उल्लंघन के लिए जिम्मेदार नहीं होगा।

अस्वीकरण

शोध लेखों में व्यक्त विचार पूरी तरह से लेखकों के हैं और किसी भी तरह से संस्थान या संपादकीय बोर्ड की सोच को नहीं दर्शाते हैं।